मेट्रो निर्माण ने पकड़ी रफ्तार

सात किलोमीटर लंबी सुरंग और 4 स्टेशनों का बेस भी तैयार

Neeraj.Tiwari
@timesgroup.com

■ **मुंबई:** महानगर की एक मात्र भूमिगत मेट्रो लाइन-3 (कोलाबा-बांद्रा-सीप्ज) का निर्माण कार्य जोरों पर है। टनल बोरिंग मशीनों (टीबीएम) से सुरंग बनाने का काम रफ्तार पकड़ रहा है। अब तक 7 किलोमीटर लंबी सुरंग तैयार हो चुकी है। चार बड़े स्टेशनों का बेस प्लैटफॉर्म बनाने के लिए तैयार होने की जानकारी मुंबई मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एमएमआरसीएल) ने दी है।

सात किलोमीटर सुरंग तैयार: बता दें कि एमएमआरसीएल द्वारा मुंबई की भूमिगत मेट्रो लाइन के निर्माण की देख-रेख की जा रही है। भूमिगत मेट्रो के लिए 33.5 किलो मीटर लंबी सुरंग का निर्माण किया जाना है। इसका ठेका पहले ही दिया जा चुका था। ठेकेदारों ने सुरंग बनाने के लिए शहर में कई साफ्ट बनाए, जहां से सुरंग बनाने का काम जारी है। खबर लिखे जाने तक मेट्रो-3 की 7 किलोमीटर सुरंग बनकर तैयार होने की जानकारी एमएमआरसीएल ने दी है।

13 टीबीएम से जारी सुरंग का काम: मेट्रो लाइन-3 की सुरक्षा के लिए टनल बनाने के लिए सबसे आधुनिक तकनीक का उपयोग किया जा रहा है। इसके तहत टनल बोरिंग मशीनों का इस्तेमाल किया जा रहा है। इस काम के लिए 17 टीबीएम मशीनों को उपयोग किया जाना है, इनमें से 16 मशीनें मुंबई पहुंच चुकी हैं, जबकि एक और जल्द ही मुंबई पहुंचेगी। फिलहाल 13 मशीनों से सुरंग बनाने का काम जारी है। शेष तीनों मशीनों की असेंबलिंग जारी है। असेंबल होने के बाद इन मशीनों से भी सुरंग का निर्माण किया जाएगा।

4 स्टेशनों का बेस तैयार

मेट्रो लाइन तीन में कोलाबा-बांद्रा-सीप्ज के बीच कुल 27 स्टेशन बनाए जाने हैं। इनमें से कुल 4 स्टेशनों के बेस बनकर तैयार हैं। इन स्टेशनों में सहार, टी-2, सीएसटी और सिद्धिविनायक के नाम शामिल हैं।

मेट्रो-3 की खासियत

- 33.5 किलोमीटर लंबा भूमिगत मार्ग
- कोलाबा-बांद्रा-सीप्स के बीच परिचालन
- दिसंबर, 2022 तक निर्माणकार्य पूरा करने का लक्ष्य
- अनुमानित लागत 23,500 करोड़ रुपये
- 27 स्टेशन, एक डिपो

ऐसे होता है भूमिगत मेट्रो का काम

जियोलॉजिकल सर्वे: जमीन में मौजूद घटकों की जानकारी के लिए सबसे पहले जियोलॉजिकल सर्वे किया जाता है। इसमें जमीन के भीतर की स्थिति कैसी है, यानी जमीन की आंतरिक सतह दलदली है या चट्टानयुक्त।

पाइलिंग: उसमें जमीन के अंदर मौजूद पानी जमा न हो, इसके लिए कॉलम बनाए जाते हैं, जिसे पाइलिंग कहा जाता है। इससे जमीन का पानी गड्ढे में दोबारा नहीं आता।

टीबीएम को सेट करना: सुरंग बनाने के लिए इन गड्ढों में टनल बोरिंग मशीनों को सेट किया जाता है। ये मशीनें कई हिस्सों में काम करती हैं, इसलिए इन्हें साफ्ट में लोअर करने के बाद असेंबल करना पड़ता है।

प्री-कास्टिंग: इसमें सबसे पहला भाग कटर होता है, जो जमीन को काटकर सुरंग तैयार करता है। इसके बाद दूसरा भाग कटे हुए भाग पर कोटिंग कर देता है। तीसरे भाग में मिट्टी को बाहर निकाला जाता है। इसके लिए टीबीएम में सिलिंडर के आकार का हिस्सा होता है, जो मिट्टी को बाहर निकालकर मग ट्रेन में डाल देता है।

ट्रैक बिछाने का काम: एक बार सुरंग तैयार हो गई, तो मेट्रो के आधार पर रेल ट्रैक बिछाए जाते हैं। फिर सिग्नल और रोलिंग स्टॉक सेट किए जाते हैं। अंत में मेट्रो रेक का ट्रायल किया जाता है।

रात में हो सकेगा निर्माण कार्य

रिपोर्टर, मुंबई : मुंबई उच्च न्यायालय ने मुंबई मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन को दक्षिण मुंबई में कफ परेड इलाके में बन रही मेट्रो तीन परियोजना का निर्माण और अन्य सहायक काम अब रात में भी करने की अनुमति दे दी है।

कार्यवाहक न्यायाधीश एनएच पाटील और न्यायाधीश जीएस कुलकर्णी ने यह भी कहा कि रात में काम करते समय इस परियोजना को बनाने वाले मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन, ठेकेदार लार्सन ऐंड टूब्रो यह ध्यान रखेंगे कि इस काम के दौरान कम से कम ध्वनि प्रदूषण हो। ध्वनि प्रदूषण के बारे में राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी शोध संस्थान (नीरी) ने मापदंड तैयार किए हैं।

कोर्ट ने यह मंजूरी मेट्रो की याचिका पर दी है। कुछ दिन पहले कोर्ट ने मेट्रो का काम कफ परेड में रात में करने पर रोक लगा दी थी, क्योंकि इससे वहां रहने वाले नागरिकों का शोर के चलते हुए जीना दूभर हो गया था। मेट्रो का कहना था कि उसका रात में काम करना जरूरी है, क्योंकि दिन में काम करने से ट्रैफिक की समस्या हो सकती है। मेट्रो बनाते समय टनल की बोरिंग जैसे महत्वपूर्ण काम करने हैं, जिनमें काफी शोर होता है। अब इस कोर्ट मंजूरी के बाद मेट्रो का निर्माण काम रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक हो सकेगा।